अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "फ़ैज़ाने रमज़ान" से लिये गए मवाद की आठवीं क़िस्त

Gunahon Se Paak Saaf (Hindi)

गुनाहों से पाक साफ़

कुल सफ़हात 20

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

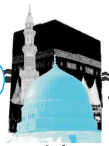

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

ता़लिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

गुनाहों से पाक साफ़

येह रिसाला **(गुनाहों से पाक साफ़)**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ईमेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डीपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hindibook@dawateislamihind.net

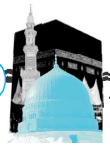

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** पाक उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

येह मज़्मून "फ़ैज़ाने रमज़ान" के सफ़हा 363 ता 377 से लिया गया है।

गुनाहों से पाक साफ़

दुआए अ़त्तार

या **अल्लाह** पाक! जो कोई रिसाला "**गुनाहों से पाक साफ़**" के 18 सफ़हात पढ़ या सुन ले उस को गुनाहों से पाक साफ कर के बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदोस में दाख़िला अ़ता फ़रमा। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरवरे काएनात, शाहे मोजूदात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद है : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم ص ٢١٢ حديث ٤٠٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"ईद" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से शश ईद के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

नौ मौलूद की त़रह़ गुनाहों से पाक : ﴿1﴾ "**जिस** ने **रमज़ान** के रोज़े रखे फिर छे[6] दिन शव्वाल में रखे तो गुनाहों से ऐसे निकल गया जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुवा है।" (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج٣ ص٤٢٥ حديث٥١٠٢)

गोया उ़म्र भर का रोज़ा रखा : ﴿2﴾ "**जिस** ने **रमज़ान** के रोज़े

www.dawateislami.net

रखे फिर इन के बा'द **छे[6] दिन शव्वाल** में रखे, तो ऐसा है जैसे दहर का (या'नी उम्र भर के लिये) रोज़ा रखा।" (مُسلِم ص٥٩٢ حدیث١١٦٤)

साल भर रोज़े रखे : ﴿3﴾ "**जिस** ने ईदुल फ़ित्र के बा'द (शव्वाल में) **छे[6] रोज़े** रख लिये तो उस ने पूरे साल के रोज़े रखे कि जो एक नेकी लाएगा उसे दस मिलेंगी। तो माहे रमज़ान का रोज़ा दस महीने के बराबर है और इन छे[6] दिनों के बदले में दो महीने तो पूरे साल के रोज़े हो गए।"

(اَلسُّنَنُ الکُبریٰ لِلنَسائی ج٢ ص١٦٢، ١٦٣ حدیث ٢٨٦٠، ٢٨٦١)

शश ईद के रोज़े कब रखे जाएं ? : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی "बहारे शरीअ़त" के ह़ाशिये में फ़रमाते हैं : "बेहतर येह है कि येह रोज़े मुतफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं और **ईद** के बा'द लगातार **छे[6] दिन** में एक साथ रख लिये, जब भी ह़रज नहीं।" (دُرِّمُختار ج٣ ص٤٨٥, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 1010)

ख़लीले मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद ख़लील ख़ान क़ादिरी बरकाती عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْهَادِی फ़रमाते हैं : येह रोज़े **ईद** के बा'द लगातार रखे जाएं तब भी मुज़ायक़ा नहीं और बेहतर येह है कि मुतफ़र्रिक़ (या'नी जुदा जुदा) रखे जाएं या'नी (जैसे) हर हफ़्ते में दो रोज़े और **ईदुल फ़ित्र** के दूसरे रोज़ एक रोज़ा रख ले और पूरे माह में रखे तो और भी मुनासिब मा'लूम होता है। (सुन्नी बिहिश्ती ज़ेवर, स. 347) अल ग़रज़ **ईदुल फ़ित्र** का दिन छोड़ कर सारे महीने में जब चाहें शश ईद के रोज़े रख सकते हैं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

ज़ुल हिज्जतिल हराम के इब्तिदाई दस दिन के फ़ज़ाइल :

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 10 सफ़हा 649 पर है : सौम (या'नी रोज़ा) वग़ैरा आ'माले सालिहा (या'नी नेक आ'माल) के लिये बा'दे **रमज़ानुल मुबारक** सब दिनों से अफ़्ज़ल अशरए ज़िल हिज्जा है।

"अल्लाह" के चार हुरूफ़ की निस्बत से अशरए ज़ुल हिज्जतिल हराम के फ़ज़ाइल के मुतअल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ "**इन दस दिनों** से ज़ियादा किसी दिन का नेक अमल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को महबूब नहीं।" सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने अर्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद ?" फ़रमाया : "और न राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद, मगर वोह कि अपने जान व माल ले कर निकले फिर उन में से कुछ वापस न लाए।" (या'नी सिर्फ़ वोह मुजाहिद अफ़्ज़ल होगा जो जान व माल क़ुरबान करने में काम्याब हो गया) (بُخارِی ج۱ص۳۳۳حدیث۹۶۹)

﴿2﴾ "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को अशरए ज़ुल हिज्जा से ज़ियादा किसी दिन में अपनी इबादत किया जाना पसन्दीदा नहीं इस के हर दिन का रोज़ा एक साल के रोज़ों और हर शब का क़ियाम **शबे क़द्र** के बराबर है।"

(تِرمِذی ج۲ص۱۹۲حدیث۷۵۸)

﴿3﴾ "**मुझे अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर गुमान है कि अरफ़ा (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतिल हराम) **का रोज़ा** एक साल क़ब्ल और एक साल बा'द के गुनाह मिटा देता है।" (مُسلِم ص۵۹۰حدیث۱۱۶۲)

﴿4﴾ **अरफ़ा** (या'नी 9 ज़ुल हिज्जतिल हराम) **का रोज़ा** हज़ार रोज़ों के बराबर

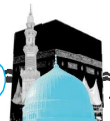

है। (شُعَبُ الْاِیْمَان ج۳ ص۳۵۷حدیث۳۷٦٤) (मगर अ़रफ़ात में ह़ाजी को अ़रफ़े का रोज़ा मक्रूह है,) ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **अ़रफ़े** के दिन (या'नी 9 ज़ुल ह़िज्जतिल ह़राम के रोज़ ह़ाजी को) **अ़रफ़ात** में रोज़ा रखने से मन्अ़ फ़रमाया। (ابْنُ خُزَیْمَة ج۳ص۲۹۲حدیث۲۱۰۱)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अय्यामे बीज़ के रोज़े : **हर** मदनी माह (या'नी सिने हिजरी के महीने) में कम अज़ कम तीन रोज़े हर इस्लामी भाई और इस्लामी बहन को रख ही लेने चाहिएं। इस के बे शुमार दुन्यवी और उख़्रवी फ़वाइद हैं। बेहतर येह है कि येह रोज़े "अय्यामे बीज़" या'नी चांद की 13, 14 और 15 तारीख़ को रखे जाएं।

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 3 रिवायात :

﴾1﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ह़फ़्सा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم चार चीज़ें नहीं छोड़ते थे, आ़शूरा का रोज़ा और अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के रोज़े और हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** और फ़ज्र (के फ़र्ज़) से पहले दो रक्अ़तें (या'नी दो सुन्नतें)। (نَسَائی ص۳۹۵ حدیث۲٤۱۳) ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से "अ़शरए ज़ुल ह़िज्जा के रोज़े" से मुराद ज़ुल ह़िज्जा के इब्तिदाई नव दिनों के रोज़े हैं, वरना दस ज़ुल ह़िज्जा को रोज़ा रखना ह़राम है।

(माख़ूज़ अज़ मिरआतुल मनाजीह़, जि. 3, स. 195)

﴾2﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि त़बीबों के त़बीब, **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अय्यामे

www.dawateislami.net

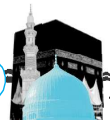

बीज़ में **बिग़ैर** रोज़ा के न होते न सफ़र में न ह़ज़र (या'नी क़ियाम) में। (نَسَائی ص۳۸٦ حدیث۲۳٤۲)

﴿3﴾ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : "अम्बिया के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم एक महीने में **हफ़्ता, इतवार** और **पीर** का जब कि दूसरे माह **मंगल, बुध** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा करते।" (تِرْمِذِی ج۲ص۱۸٦ حدیث۷٤٦)

अय्यामे बीज़ के रोज़ों के बारे में 5 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴿1﴾ "**जिस** त़रह़ तुम में से किसी के पास लड़ाई में बचाव के लिये ढाल होती है इसी त़रह़ रोज़ा जहन्नम से तुम्हारी ढाल है और **हर माह तीन दिन रोज़े** रखना बेहतरीन रोज़े हैं।" (ابنِ خُزَیْمہ ج۳ص۳۰۱ حدیث۲۱۲۵) ﴿2﴾ हर महीने में **तीन दिन के रोज़े** ऐसे हैं जैसे दह्र (या'नी हमेशा) के रोज़े। (بخاری ج۱ص٦٤۹ حدیث۱۹۷۵) ﴿3﴾ **रमज़ान** के रोज़े और हर महीने में तीन दिन के रोज़े **सीने की ख़राबी** (या'नी जैसे निफ़ाक़) दूर करते हैं। (مُسنَد اِمَام اَحمَد ج۹ص۳٦ حدیث۲۳۱۳۲) ﴿4﴾ **जिस** से हो सके हर महीने में **तीन रोज़े** रखे कि हर रोज़ा दस गुनाह मिटाता और गुनाह से ऐसा पाक कर देता है जैसा पानी कपड़े को। (مُعْجَم کَبِیْر ج۲۵ص۳۵ حدیث٦۰) ﴿5﴾ **जब** महीने में **तीन रोज़े** रखने हों तो 13, 14 और 15 को रखो। (نَسَائی ص۳۹٦ حدیث۲٤۱۷)

मरने की दुआएं मांगते थे : मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अय्यामे बीज़ के रोज़ों, नेकियों और सुन्नतों का ज़ेह्न बनाने के लिये तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "दा'वते इस्लामी" का **मदनी माह़ोल** अपना लीजिये, सिर्फ़ दूर दूर से देखने से

www.dawateislami.net

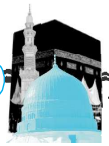

बात नहीं बनेगी, सुन्नतों की तरबियत के मदनी क़ाफ़िलों में **आ़शिक़ाने रसूल** के साथ सुन्नतों भरा सफ़र कीजिये, **रमज़ानुल मुबारक** का **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** भी फ़रमाइये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ वोह क़ल्बी सुकून मुयस्सर आएगा कि आप हैरान रह जाएंगे। **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल में आ कर कैसे कैसे बिगड़े हुए लोग राहे रास्त पर आ जाते हैं इस की एक झलक मुलाह़ज़ा फ़रमाइये, चुनान्चे एक नौ जवान इन्तिहाई फ़सादी और शरीर थे, लड़ाई झगड़ा उन का पसन्दीदा मश्ग़ला था, उन की शर अंगेज़ियों से सारा महल्ला तंग था और घर वाले तो इस क़दर बेज़ार थे कि **उन के मरने की दुआ़एं मांगते थे।** ख़ुश क़िस्मती से कुछ इस्लामी भाइयों ने **इन्फ़िरादी कोशिश** करते हुए उन्हें **रमज़ानुल मुबारक** के **इज्तिमाई ए'तिकाफ़** की दा'वत पेश की उन्हों ने मुरव्वत में हां कर दी। और **रमज़ानुल मुबारक** (1420 सि.हि. 1999 सि.ई.) में **मेमन मस्जिद** के अन्दर आ़शिक़ाने रसूल के साथ **मो'तकिफ़** हो गए। दौराने ए'तिकाफ़ उन्हें वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ का त़रीक़ा नीज़ हुक़ूक़ुल्लाह व हुक़ूक़ुल इबाद और एह़तिरामे मुस्लिम के अह़काम सीखने को मिले, सुन्नतों भरे पुरसोज़ बयानों और रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ओं ने उन्हें हिला कर रख दिया! बसद नदामत उन्हों ने साबिक़ा गुनाहों से **तौबा** की, नेकियां करने की दिल में उमंग पैदा हुई। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ उन्हों ने इ़श्क़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की निशानी दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर को सब्ज़ इमामा शरीफ़ के ताज से सर सब्ज़ किया और लड़ाई झगड़ों की जगह **नेकी की दा'वत** के शैदाई बन गए।

www.dawateislami.net

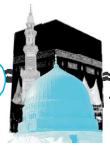

आओ आ कर गुनाहों से तौबा करो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

रह़मते ह़क़ से दामन तुम आ कर भरो, मदनी माह़ोल में कर लो तुम ए'तिकाफ़

(वसाइले बख़्शिश, स. 640)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"मुस्तफ़ा" के पांच हुरूफ़ की निस्बत से पीर शरीफ़ और जुमे'रात के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ 5 रिवायात

﴾1﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं **: पीर** और **जुमे'रात** को आ'माल पेश होते हैं तो मैं पसन्द करता हूं कि मेरा अ़मल उस वक़्त पेश हो कि मैं रोज़ादार होउं। (ترمذی ج ٢ ص ١٨٧ حدیث ٧٤٧) ताकि रोज़े की बरकत से रह़मते इलाही का दरिया जोश मारे। (मिरआत, जि. 3, स. 188)

﴾2﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ और जुमे'रात को रोज़े रखा करते थे, इस के बारे में अ़र्ज़ की गई तो फ़रमाया **:** इन दोनों दिनों में **अल्लाह तआ़ला** हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत फ़रमाता है मगर वोह दो शख़्स जिन्हों ने बाहम (या'नी आपस में) जुदाई कर ली है उन की निस्बत मलाएका से फ़रमाता है इन्हें छोड़ दो यहां तक कि सुल्ह़ कर लें। (ابنِ ماجه ج٢ ص٣٤٤ حدیث ١٧٤٠)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 196 पर फ़रमाते हैं **:** سُبْحٰنَ الله ! येह दोनों दिन बड़ी अ़ज़मत और बरकत वाले हैं क्यूं न हों कि इन्हें अ़ज़मत वालों से निस्बत है, "जुमे'रात"

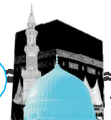

तो जुमुआ का पड़ोसी है और ह़ज़रते आमिना ख़ातून के ह़ामिला होने का दिन है, और "पीर" हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का दिन भी है और नुज़ूले कुरआने करीम का भी।

﴾3﴿ **उम्मुल** मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا रिवायत फ़रमाती हैं : नबियों के सरताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** के रोज़े का ख़ास ख़याल रखते थे। **(تِرمِذی ج۲ ص۱۸٦ حدیث۷٤٥)**

﴾4﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, रसूलों के सालार, नबियों के सरदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से **पीर शरीफ़** के रोज़े का सबब दरयाफ़्त किया गया तो फ़रमाया : इसी में **मेरी विलादत** हुई, इसी में मुझ पर वह़्य नाज़िल हुई। **(مُسلِم ص۵۹۱ حدیث۱۹۸۔۱۱٦۲)**

﴾5﴿ **ह़ज़रते** सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के ग़ुलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है : फ़रमाते हैं कि सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सफ़र में भी **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा तर्क नहीं फ़रमाते थे। मैं ने उन की बारगाह में अ़र्ज़ की : क्या वज्ह है कि आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस बड़ी उ़म्र में भी **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखते हैं ? फ़रमाया : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा करते थे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या वज्ह है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **पीर** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखते हैं ? तो

www.dawateislami.net

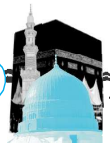

इर्शाद फ़रमाया : लोगों के आ'माल **पीर** और **जुमे'रात** को पेश किये जाते हैं। (شُعَبُ الْایمان ج۳ص۳۹۲حدیث۳۸۵۹)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"जन्नत" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध और जुमे'रात के रोज़ों के 3 फ़ज़ाइल

﴿1﴾ **हज़रते** सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है **अल्लाह** के प्यारे रसूल, रसूले मक़्बूल, सय्यिदह आमिना के गुलशन के महक्ते फूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बिशारत निशान है : जो **बुध** और **जुमे'रात** के रोज़े रखे उस के लिये जहन्नम से आज़ादी लिख दी जाती है। (اَبو یَعْلٰی ج۵ص۱۱۵حدیث۵۶۱۰)

﴿2﴾ **हज़रते** सय्यिदुना मुस्लिम बिन **ज़ुबैदुल्लाह** क़रशी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ अपने वालिदे मुकर्रम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत करते हैं कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में या तो ख़ुद अ़र्ज़ की या किसी और ने दरयाफ़्त किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मैं **हमेशा रोज़ा** रखूं ? सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ामोश रहे, फिर दूसरी मर्तबा अ़र्ज़ की, फिर ख़ामोशी इख़्तियार फ़रमाई। तीसरी बार पूछने पर इस्तिफ़्सार फ़रमाया कि **रोज़े** के मुतअ़ल्लिक़ किस ने सुवाल किया ? अ़र्ज़ की, मैं ने **या नबिय्यल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तो जवाबन इर्शाद फ़रमाया : बेशक तुझ पर तेरे घर वालों का हक़ है तू **रमज़ान** और इस से मुत्तसिल महीने (शव्वाल) और हर **बुध** और **जुमे'रात** के रोज़े रख कि अगर तू ऐसा करेगा तो **गोया तू ने हमेशा के रोज़े रखे।** (شُعَبُ الایمان ج۳ص۳۹۵حدیث۳۸۶۸)

www.dawateislami.net

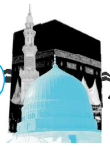

﴾3﴿ **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : "जिस ने **रमज़ान, शव्वाल, बुध** और **जुमे'रात** का रोज़ा रखा तो वोह दाख़िले जन्नत होगा।" **(اَلسُّنَنُ الْکُبْرٰی لِلنَّسَائی ج۲ص۱٤۷حدیث۲۷۷۸)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"करम" के तीन हुरूफ़ की निस्बत से बुध, जुमे'रात और जुमुआ़ के रोज़ों के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **जन्नत** में एक मकान बनाएगा जिस का बाहर का हिस्सा अन्दर से दिखाई देगा और अन्दर का बाहर से। **(مُعْجَم اَوْسَط ج۱ص۸۷حدیث۲۰۳)**

﴾2﴿ **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **जन्नत** में मोती और याकूत व ज़बरजद का महल बनाएगा और उस के लिये दोज़ख़ से बराअत (या'नी आज़ादी) लिख दी जाएगी। **(شُعَبُ الْاِیمان ج۳ص۳۹۷حدیث۳۸۷۳)**

﴾3﴿ **जिस** ने **बुध, जुमे'रात** व **जुमुआ़** का रोज़ा रखा फिर जुमुआ़ को थोड़ा या ज़ियादा तसद्दुक़ (या'नी ख़ैरात) करे तो जो गुनाह किये हैं बख़्श दिये जाएंगे और ऐसा हो जाएगा जैसे उस दिन कि अपनी मां के पेट से पैदा हुवा था। **(ایضاً حدیث۳۸۷۲)**

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"जुमुआ़" के चार हुरूफ़ की निस्बत से जुमुआ़ के रोज़े के मुतअ़ल्लिक़ 4 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ "**जिस** ने **जुमुआ़** का रोज़ा रखा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे आख़िरत के दस

दिनों के बराबर अज्र अ़त़ा फ़रमाएगा और वोह अय्याम (अपनी मिक़्दार में) अय्यामे दुन्या की त़रह़ नहीं है।'' (شُعَبُ الْاِیمان ج ۳ ص ۳۹۳ حدیث ۳۸۶۲)

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 10 सफ़ह़ा 653 पर है : रोज़ए जुमुआ़ या'नी जब इस के साथ पन्ज शम्बा या शम्बा (या'नी जुमे'रात या हफ़्ते का रोज़ा) भी शामिल हो मरवी हुवा कि **दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है।**

﴾2﴿ ''**जिस** ने **जुमुआ़** अदा किया और इस दिन का **रोज़ा** रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और निकाह़ में ह़ाज़िर हुवा तो उस के लिये जन्नत वाजिब हो गई।'' (مُعْجَم کَبِیر ج۸ ص۹۷ حدیث۷۴۸۴)

﴾3﴿ ''**जिस** ने रोज़े की ह़ालत में यौमे **जुमुआ़** की सुब्ह़ की और मरीज़ की **इयादत** की और **जनाज़े** के साथ गया और **सदक़ा** किया तो उस ने अपने लिये **जन्नत** वाजिब कर ली।'' (شُعَبُ الْاِیمان ج۳ ص۳۹۳ حدیث۳۸۶۴)

﴾4﴿ **जिस** ने बरोज़े **जुमुआ़** रोज़ा रखा और मरीज़ की **इयादत** की और **मिस्कीन** को खाना खिलाया और **जनाज़े** के हमराह चला तो उसे **चालीस साल** के गुनाह लाह़िक़ न होंगे। (ایضاً ص۳۹۴ حدیث۳۸۶۵) ह़दीसे पाक के इस हिस्से ''उसे चालीस साल के गुनाह लाह़िक़ न होंगे'' से मुराद या तो उसे नेकी ही की तौफ़ीक़ मिलेगी या गुनाह सादिर हुए तो ऐसी तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी जो उस के गुनाहों को मिटा देगी।

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत कम **जुमुआ़** का रोज़ा तर्क फ़रमाते थे। (اَیضاً)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस त़रह़ आ़शूरा के रोज़े के पहले या बा'द में एक रोज़ा रखना है इसी त़रह़ **जुमुआ़** में भी करना है, क्यूं कि ख़ुसूसिय्यत के साथ तन्हा **जुमुआ़** (इस मस्अले का ख़ुलासा आगे आ रहा है) या सिर्फ़ **हफ़्ते** का रोज़ा रखना मक्रूहे तन्ज़ीही (या'नी ना पसन्दीदा) है। हां अगर किसी मख़्सूस तारीख़ को **जुमुआ़** या हफ़्ता आ गया तो तन्हा **जुमुआ़** या हफ़्ते का रोज़ा रखने में कराहत नहीं। मसलन 15 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म, 27 रजबुल मुरज्जब वग़ैरा।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"फ़ज़्ल" के तीन ह़ुरूफ़ की निस्बत से तन्हा जुमुआ़ का रोज़ा रखने की मुमानअ़त पर 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ शबे **जुमुआ़** को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो और न ही **यौमे जुमुआ़** को दीगर दिनों में रोज़े के साथ ख़ास करो मगर येह कि तुम ऐसे रोज़े में हो जो तुम्हें रखना हो। (مُسلِم ص٥٧٦ حدیث١١٤٤)

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर "शबे जुमुआ़ को दीगर रातों में शब बेदारी के लिये ख़ास न करो।" के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जुमुआ़ की रात में इ़बादत करना मन्अ़ नहीं, बल्कि और रातों में बिल्कुल इ़बादत न करना मुनासिब नहीं कि येह ग़फ़्लत की दलील है चूंकि जुमुआ़ की रात ही ज़ियादा अ़ज़मत वाली है, अन्देशा था कि लोग इस को नफ़्ली इ़बादतों से ख़ास कर लेंगे इस लिये इसी रात का नाम लिया गया।

www.dawateislami.net

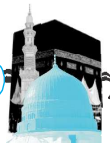

﴿2﴾ **तुम** में से कोई हरगिज़ **जुमुआ़** का रोज़ा न रखे मगर येह कि इस के पहले या बा'द में एक दिन मिला ले। (بُخارِی ج۱ص۶۵۳حدیث۱۹۸۵)

﴿3﴾ **जुमुआ़** का दिन तुम्हारे लिये **ईद** है इस दिन रोज़ा मत रखो मगर येह कि इस से पहले या बा'द में भी रोज़ा रखो।

(التَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۲ص۸۱حدیث۱۱)

अह़ादीसे मुबारका से मा'लूम हुवा कि तन्हा **जुमुआ़** का रोज़ा न रखना चाहिये मगर येह मुमानअ़त सिर्फ़ उसी सूरत में है जब कि ख़ुसूसिय्यत के साथ जुमुआ़ ही का रोज़ा रखा जाए अगर ख़ुसूसिय्यत न हो मसलन जुमुआ़ के रोज़ छुट्टी थी इस से फ़ाएदा उठाते हुए रोज़ा रख लिया तो कराहत नहीं।

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان मिरआत जिल्द 3 सफ़ह़ा 187 पर फ़रमाते हैं : मसलन कोई शख़्स हर ग्यारहवीं या बारहवीं तारीख़ को रोज़ा रखने का आ़दी हो और इत्तिफ़ाक़ से उस दिन जुमुआ़ आ जाए तो रख ले, अब ख़िलाफ़े औला भी नहीं।

रोज़ए जुमुआ़ के मुतअ़ल्लिक़ एक फ़तवा : इस ज़िम्न में **फ़तावा रज़विय्या** (मुख़र्रजा) जिल्द 10 सफ़ह़ा 559 से मा'लूमाती सुवाल जवाब मुलाह़ज़ा हों : **सुवाल :** क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन इस मस्अले में कि **जुमुआ़** का रोज़ए नफ़्ल रखना कैसा है ? एक शख़्स ने जुमुआ़ का रोज़ा रखा दूसरे ने उस से कहा जुमुआ़ ईदुल मुअमिनीन है, रोज़ा रखना इस दिन में मक्रूह है और ब इसरार बा'द दो पहर के रोज़ा तुड़वा दिया और किताब "सिर्रुल क़ुलूब" में मक्रूह होना लिखा है

www.dawateislami.net

दिखला दिया। ऐसी सूरत में रोज़ा तोड़ने वाले के ज़िम्मे कफ़्फ़ारा है या नहीं ? और तुड़वाने वाले को कोई इल्ज़ाम है या नहीं ? **अल जवाब :** जुमुआ़ का रोज़ा ख़ास इस निय्यत से (रखना) कि आज जुमुआ़ है इस का रोज़ा बित्तख़्सीस (या'नी ख़ुसूसिय्यत से रखना) चाहिये, मक्रूह है, मगर न वोह कराहत कि तोड़ना लाज़िम हुवा, और अगर ख़ास ब निय्यते तख़्सीस न थी तो अस्लन कराहत भी नहीं, उस दूसरे शख़्स को अगर निय्यते मक्रूहा पर इत्तिलाअ़ न थी जब तो ए'तिराज़ ही सिरे से ह़माक़त हुवा और रोज़ा तुड़वा देना शर्अ़ पर सख़्त जुर्अत, और अगर इत्तिलाअ़ भी हुई जब भी मस्अला बता देना काफ़ी था न कि रोज़ा तुड़वाना और वोह भी बा'द दो पहर के, जिस का इख़्तियार नफ़्ल रोज़े में वालिदैन के सिवा किसी को नहीं, तोड़ने वाला और तुड़वाने वाला दोनों गुनहगार हुए, तोड़ने वाले पर क़ज़ा लाज़िम है कफ़्फ़ारा अस्लन (या'नी बिल्कुल) नहीं। وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

हफ़्ता और इतवार के रोज़े : ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मे सलमा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से मरवी है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **हफ़्ते और इतवार** का रोज़ा रखा करते और फ़रमाते : "येह दोनों (या'नी हफ़्ता और इतवार) मुश्रिकीन की ईद के दिन हैं और मैं चाहता हूं कि इन की मुख़ालफ़त करूं।" (ابنِ خُزَیمہ ج۳ص۳۱۸حدیث۲۱۶۷)

तन्हा हफ़्ते का रोज़ा रखना मन्अ़ है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन बुस्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه अपनी बहन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से रिवायत करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

www.dawateislami.net

"हफ़्ते के दिन का रोज़ा फ़र्ज़ रोज़ों के इलावा मत रखो।" हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ईसा **तिरमिज़ी** عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि येह ह़दीस ह़सन है और यहां मुमानअ़त से मुराद किसी शख़्स का हफ़्ते के रोज़े को ख़ास कर लेना है कि यहूदी इस दिन की ता'ज़ीम करते हैं। (ترمذی ج۲ص۱۸٦حدیث۷٤٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِيب! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

"ऐ शहन्शाहे मदीना" के तेरह हुरूफ़ की निस्बत से रोज़ए नफ़्ल के 13 मदनी फूल

- **मां** बाप अगर बेटे को **नफ़्ल रोज़े** से इस लिये मन्अ़ करें कि बीमारी का अन्देशा है तो वालिदैन की इताअ़त करे। (رَدُّالْمُحتارج۳ص٤٧٨)
- **शौहर** की इजाज़त के बिग़ैर बीवी **नफ़्ल रोज़ा** नहीं रख सकती। (دُرِّمُختار ج۳ص٤٧٧)
- **नफ़्ल रोज़ा** क़स्दन शुरूअ़ करने से पूरा करना वाजिब हो जाता है अगर तोड़ेगा तो क़ज़ा वाजिब होगी। (ایضاًص٤٧٣)
- **नफ़्ल रोज़ा** जान बूझ कर नहीं तोड़ा बल्कि बिला इख़्तियार टूट गया मसलन औरत को रोज़े के दौरान हैज़ आ गया तो रोज़ा टूट गया मगर क़ज़ा वाजिब है। (ایضاًص٤٧٤)
- **नफ़्ल रोज़ा** बिला उ़ज़्र तोड़ना, **ना जाइज़** है। मेहमान के साथ अगर मेज़बान न खाएगा तो उसे या'नी मेहमान को ना गवार गुज़रेगा। या **मेहमान** अगर खाना न खाए तो **मेज़बान** को अज़िय्यत होगी तो **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ने के लिये येह उ़ज़्र है बशर्ते कि येह भरोसा हो कि

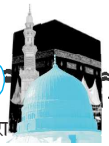

इस की क़ज़ा रख लेगा और येह भी शर्त है कि ज़ह्वए कुब्रा से पहले तोड़े बा'द को नहीं। (دُرِّمُختار، رَدُّالْمُحتار ج ۳ ص ۴۷۵-۴۷۶)

- **वालिदैन** की नाराज़ी के सबब अस्र से पहले तक **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है बा'दे अस्र नहीं। (ایضاً ص ۴۷۷)
- **अगर** किसी इस्लामी भाई ने दा'वत की तो ज़ह्वए कुब्रा से क़ब्ल **नफ़्ल रोज़ा** तोड़ सकता है मगर क़ज़ा वाजिब है। (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۷۳،۴۷۷)
- **इस** त़रह़ निय्यत की, कि "कहीं दा'वत हुई तो रोज़ा नहीं और न हुई तो है।" येह निय्यत सह़ीह़ नहीं, बहर ह़ाल रोज़ादार नहीं।

(عالمگیری ج ۱ ص ۱۹۵)

- **मुलाज़िम** या मज़दूर अगर **नफ़्ल रोज़ा** रखें तो काम पूरा नहीं कर सकते तो "मुस्ताजिर" (या'नी जिस ने मुलाज़मत या मज़दूरी पर रखा है) की इजाज़त ज़रूरी है। और अगर काम पूरा कर सकते हैं तो इजाज़त की ज़रूरत नहीं।[1] (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۴۷۸)
- **त़ालिबे इल्मे दीन** अगर नफ़्ल रोज़ा रखता है तो कमज़ोरी होती, नींद चढ़ती और सुस्ती के सबब त़लबे इल्मे दीन में रुकावट खड़ी होती है तो अफ़्ज़ल येह है नफ़्ल रोज़ा न रखे।
- **ह़ज़रते** सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام एक दिन छोड़ कर एक दिन रोज़ा रखते थे। इस त़रह़ रोज़े रखना "सौमे दावूदी" कहलाता है और हमारे लिये येह अफ़्ज़ल है। जैसा कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "अफ़्ज़ल रोज़ा मेरे भाई

1 : मुलाज़मत के मुतअ़ल्लिक़ बेहतरीन मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना का शाएअ़ कर्दा सिर्फ़ 22 सफ़ह़ात का रिसाला "ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल" का ज़रूर मुत़ालआ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

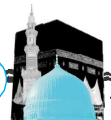

दावूद (عَلَيْهِ السَّلَام) का रोज़ा है कि वोह एक दिन रोज़ा रखते और एक दिन न रखते और दुश्मन के मुक़ाबले से फ़िरार न होते थे।''

(ترمذی ج۲ص۱۹۷حدیث۷۷۰)

❁ **हज़रते** सय्यिदुना सुलैमान عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तीन दिन **महीने** के शुरूअ़ में, तीन दिन वस्त़ (या'नी बीच) में और तीन दिन आख़िर में रोज़ा रखा करते थे और इस त़रह़ महीने के अवाइल, अवासित़ और अवाख़िर में रोज़ादार रहते थे। (ابن عساکر ج۲٤ص٤٨)

❁ **सौमे** दह्र (या'नी हमेशा रोज़े रखना सिवा इन पांच दिनों या'नी शव्वाल की यकुम और ज़िल ह़िज्जा की दसवीं ता तेरहवीं के जिन में रोज़ा रखना ह़राम है) मक्रूहे तन्ज़ीही है। (دُرِّمُختار ج۳ص۳۹۱)

हमेशा रोज़ा रखना : हमेशा के रोज़ों से मुमानअ़त पर ''बुख़ारी शरीफ़'' की येह ह़दीस भी है और इस का मफ़्हूम भी उ़लमा ने तावील के साथ बयान फ़रमाया है चुनान्चे फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : لَا صَامَ مَنْ صَامَ الدَّهْرَ۔ या'नी जो हमेशा रोज़े रखे उस ने रोज़े रखे ही नहीं।

(بُخاری ج۱ص٦٥١حدیث۹۱۷۹)

शर्ह़े ह़दीस : शारेह़ बुख़ारी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुफ़्ती मुह़म्मद शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : अगर इस ख़बर को ''नह्य'' के मा'ना में मानें (या'नी अगर इस ह़दीस का येह मा'ना लें कि हमेशा रोज़े रखना मन्अ़ है और जो रखेगा तो उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा) तो (इस सूरत में ह़दीस का) येह इर्शाद उन लोगों के लिये है जिन्हें मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि इतने कमज़ोर हो जाएंगे कि जो ह़ुक़ूक़ इन पर वाजिब हैं उन को अदा नहीं कर

www.dawateislami.net

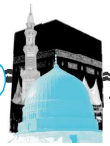

पाएंगे ख़्वाह वोह हुक़ूक़ दीनी हों या दुन्यवी, मसलन नमाज़, जिहाद, बच्चों की परवरिश के लिये कमाई, और (पहली सूरत से हट कर दूसरी सूरत येह बनती है कि) अगर मुसल्सल रोज़ा रखने की वज्ह से (अगर) इन (रोज़ादारों) का ज़न्ने ग़ालिब हो कि हुक़ूक़े वाजिबा तो कमा हक़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) अदा कर लेंगे मगर हुक़ूक़े ग़ैरे वाजिबा अदा करने की क़ुव्वत नहीं रहेगी, उन के लिये रोज़ा मक्रूह या ख़िलाफ़े औला है और जिन्हें इस का ज़न्ने ग़ालिब हो कि सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखने के बा वुजूद तमाम हुक़ूक़े वाजिबा, मस्नूना, मुस्तह़ब्बा कमा हक़्क़ुहू (या'नी मुकम्मल तौ़र पर) अदा कर लेंगे उन के लिये कराहत भी नहीं। बा'ज़ सह़ाबए किराम जैसे अबू त़ल्ह़ा अन्सारी और ह़म्ज़ा बिन अम्र अस्लमी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखते थे और हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें मन्अ़ नहीं फ़रमाया, इसी त़रह़ बहुत से ताबिईन और औलियाए किराम से भी सौमे दह्र (या'नी हमेशा रोज़ा) रखना मन्क़ूल है।

[اشعة اللمعات جلد ثانی ص ۱۰۰] (नुज़्हतुल क़ारी, जि. 3, स. 386 मुलख़्ख़सन)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ ! हमें ज़िन्दगी, सिह़्ह़त और फ़ुरसत को ग़नीमत जानते हुए ख़ूब ख़ूब **नफ़्ल रोज़े** रखने की सआ़दत इनायत फ़रमा, उन्हें क़बूल भी कर, हमें बे ह़िसाब बख़्श दे और हमारे मीठे मीठे मह़बूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सारी उम्मत की मग़्फ़िरत फ़रमा।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अल्लाह

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!　　صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

''अगर सुधरना चाहते हो तो ''मदनी इन्आ़मात'' मज़बूत़ी से थाम लो।''

अल मदीना

अल बक़ीअ़

17 मुह़र्रमुल ह़राम 1437 हि.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

ईसार का सवाब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स किसी चीज़ की ख़्वाहिश रखता हो, फिर उस ख़्वाहिश को रोक कर अपने ऊपर किसी और को तरजीह़ दे, तो **अल्लाह** पाक उसे बख़्श देता है।

(اِحیاءُ علومُ الدِّین، ۳/۱۱۴)

M.R.P. ₹ 100/-

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen koniya Baghicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net